हरिकथामृथसार
अणुतारतम्य संधि

हरिकथामृथसार गुरुगळ करुणधिम्धापनिथु पॆळुवे
परम भगवध्भक्त्थरिधनाधरधि कॆळुवुधु

विष्णुसर्वोत्तमनु प्रकृति क
निष्टळेनिपळानंत गुण पर
मॆष्टि पवनरु कडिमे वाणी भारतिगळधम
विष्णुवाह फणींद्र मृडरिगे
कृष्णमहिषियरध मरिवरोळु
श्रेष्टळेनिपळु जांबवतियावेषबलदिंद २९–०१

प्लवग पन्नगपाहिभूषण
युवतियरु सम तम्मोळगे जां
बवतिगिंतलि कडिमे इवरिंदिंद्रकामरिगे
अवर प्राणनु कडिमे कामन
कुवर शचि रति दअ गुरु मनु
प्रवहमारुत कोरतेयेनिसुवनारु जनरिंद २९–०२

यम दिवाकर चंद्र मानवि
समरु कौणप प्रवहगधमरु
द्युमणिगिंतलि वरुण नीचनुनारदाधमनु
सुमनसास्य प्रसूति भृगुमुनि
समरु नारदगधमरत्रि
प्रमुख विश्वामित्र वैवस्वतरनलगधम २९–०३

मित्र तार निरऋति प्रवह
पत्नि प्रावहि समरु विश्वा
मित्रगिंतलि कोरते विश्वक्सॆन गणनाथा
वित्तपति अश्विनिगळधमरु

www.sousigma.com

मित्र मोदलादवरिगिंतलि
बित्तरिपेनु शतस्थ दिविजर व्यूहनामगळ २९–०४

मरुतरोंभत्तधिक नाल्व
त्तेरडु अश्विनि विश्वेदेवरु
एरडैदु हन्नोंदु ऋद्ररु द्वादशादित्य
गुरु पितृउत्रयवष्टवसुगळु
भरत भारति पृथ्वि ऋभुवें
दरिवुदिवरनु सोमरसपानाहरहुदेंदु २९–०५

ई दिवौकसरोळगे उक्तरु
ऐदधिकदश उळिद एंभ
त्तैदु शेषरिगेणेयेनिसुवरु धनप विनायकरु
साधु वैवस्वत स्वायंभुव
श्रीद तापसरुळिदु मनु ऐ
कादशरु विघ्नेशगिंतलि नीचरेनिसुवरु २९–०६

च्यवननंदन कवि बृहस्पति
अवर जनु चथ्यमुनि पावक
ध्रुव नहुष शशिबिंदु प्रियव्रतनु प्रह्लाद
कुवलयपरुक्तैतरिंदलि
अवर रोहिणि शामला जा
न्हवि विराट्पजन्य संज्ज्ञन्यादेवियरु अधम २९–०७

द्युनदिगिंतलि नीचरेनिपरु
अनभिमानि दिवौकसरु के
चनमुनिगळिगे कडिमे स्वाहादेविगधम बुध
एनिसुवळुषादेवि नीचळु
शनि कडिमे कमाधिपति स
द्विनुत पुष्कर नीचनेनिसुव सूयनंदनगे २९–०८

www.yousigma.com

कोरतेयनिपरशीति ऋषि पु
ष्करगे ऊवशि मुख्य शत अ
प्सररु तुंबुरमुखरु अजानजरेनिसुतिहरु
करेसुवदु अनलगण नाल्व
त्तरे चतुदश द्व्यष्ट साविर
हरिमडदियरु समरेनिसुवरु पिंते पेळिदरिगे २९–०९

तदवरर नाक्यात अप्सर
सुरतियरु कृष्णांगसंगिग
गळदर तरुवायदलि चिरपितरुगळु इवरिंद
त्रिदश गंधवगण इवरिं
दधम नरगंधवरिवरिं
दुदधिमे खळपतिगळधमरु नूरु गुणदिंद २९–१०

पृथ्विपतिगळिगिंत शत मनु
जोत्तमरु कडिमेनिपरिवरिं
दुत्तरोत्तर नूरु गुणदिंदधिकरादवर
नित्यदलि चिंतिसुत नमिसुत
भृत्य नानहुदेंब भक्तर
चित्तदलि नेलेगोंडु करुणिपरखिळसौख्यगळ २९–११

द्रुम लता तृण गुल्म जीवरु
क्रमदि नीचरु इवरिगिंता
धमरेनिसुवरु नित्यबद्धरिगिंतलज्झन्यानि
तमसिग्योग्यर भृत्यरधमरु
अमरुषाद्यभिमानि दैत्यरु
नमुचि मोदलादवरिगिंतलि विप्रचितिति नीच २९–१२

अलकुमियु ता नीचळेनिपळु
कलि परमनीचतमनवनिं
दुळिद पापिगळिल्ल नोडलु ईजगत्त्रयदि

मलविसजनकालदलि क
त्तलेयोळगे कश्मल कुमाग
स्थळगळलि चिंतनेय माळपुदु बल्लवरु नित्य २९–१३

सत्वजीवर मानि ब्रह्मनु
नित्यबद्धरोळगे पुरंजन
दैत्य समुदायाधिपति कलियेनिप पवमान
नित्यदलि अवरोळगे कमप्र
वतकनु तानागि श्रीपुरु
षोत्तमन संप्रीति गोसुग माडि माडिसुव २९–१४

प्राणदेवनु त्रिविधरोळगे प्र
वीण तानेंदेनिसि अढिका
रानुसारदि कमगळ ता माडि माडिसुव
ज्ञन्यान–भक्ति सुरगे मिश्र
ज्ञन्यान मध्यम जीवरिगे अ
ज्ञन्यान मोह द्वेषगळ दैत्यरिगे कोडुतिप्प २९–१५

देवदैत्यर तारतम्यव
नी विधदि तिळिदेल्लरोळु ल
मीवरने सवोत्तमनु एंदरिदु नित्यदलि
सेविसुव भक्तरिगोलिदु सुख
वीव सवत्रदलि सुखमय
श्री विरिंचाद्यमरनुत जगन्नाथ विट्ठलनु २९–१६